

वार्षिक प्रतिवेदन 2016-17



डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार – 848125

वार्षिक प्रतिवेदन

2016-17



डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार – 848125

वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17

संरक्षक :

डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव

कुलपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

संकलन और संपादन :

डॉ. एम. पी. सिंह

प्रभारी प्राध्यापक, तकनीकी सेल

डॉ. नीरज कुमार

सहायक प्राध्यापक (कीट विज्ञान)

संक्षप्तिकरण व वैज्ञानिक हिंदी अनुवाद एवं संपादन :

डॉ. राकेशमणि शर्मा

विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष

श्रीगुप्तनाथ त्रिवेदी

सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

सहयोग :

श्री अजय कुमार सिंह

सहायक

तकनीकी सहयोग :

श्री मनीष कुमार

पुस्तकालय सहायक

प्रकाशन प्रभार :

डॉ. एस. पी. सिंह

समन्वयक, प्रकाशन प्रभाग, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा (समस्तीपुर) – 848 125.

प्रकाशित

तपन प्रिंटिंग प्रेस और स्टेशनरी वर्क्स मच्छुआटोली, पटना – 800 004

मुद्रण :

प्रकाशन विभाग, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, (समस्तीपुर), बिहार – 848125



डा० राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

वर्ष 2016-17 के दौरान डा० राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की समीक्षा

पृष्ठभूमि

डा० राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की स्थापना 3 दिसंबर, 1970 को राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के रूप में हुई थी, जिसे वर्तमान डा० राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने हेतु 28 मई, 2016 को भारतीय संसद से प्रस्ताव पारित हुआ, साथ ही पत्रांक 2455 दिनांक 7 अक्टूबर, 2016 के द्वारा अध्यादेश जारी किया गया। विश्वविद्यालय के वैधानिक प्राधिकरण—प्रबंध बोर्ड, अनुसंधान परिषद, प्रसार शिक्षा परिषद, शैक्षणिक परिषद एवं वित्त समिति हैं।

उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय स्नातक स्तर पर 5— विषयों में, स्नातकोत्तर स्तर पर 18— विषयों में एवं पीएचडी स्तर पर 9 विषयों में शिक्षा प्रदान कर रहा है। विश्वविद्यालय में छात्रों की वार्षिक नामांकन क्षमता कुल 314 है। विश्वविद्यालय ने स्नातक स्तर पर 73 छात्रों को, स्नातकोत्तर स्तर पर 46 छात्रों को एवं पीएचडी स्तर पर 6 छात्रों को वर्ष 2016-17 में उपाधि प्रदान की है।

अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य कृषकों की समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त तकनीकी विकसित करना है जिससे कृषि उत्पादकता की वृद्धि के साथ-साथ (पशुपालन और मत्स्य पालन सहित) उत्पादन की लागत को कम करना और उत्पादन में वृद्धि करना शामिल है। जलवायु परिवर्तन के वर्तमान परिदृश्य के अनुरूप कृषि उत्पादन की निरन्तरता बनाए रखने के लिए वर्ष 2016-17 में, बिहार के कृषि-पारिस्थितियों के लिए उपयुक्त फसलों की किस्मों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए विश्वविद्यालय के अंतर्गत 37 एआईसीआरपी, 13 केन्द्र सरकार की परियोजना, 18 बिहार सरकार प्रायोजित परियोजना, 5 अन्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित, 30 विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित और 5 विदेशी अनुदानित परियोजनाएं संचालित थी। इसके अलावा, विश्वविद्यालय द्वारा 3 नए वित्त पोषित परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई।

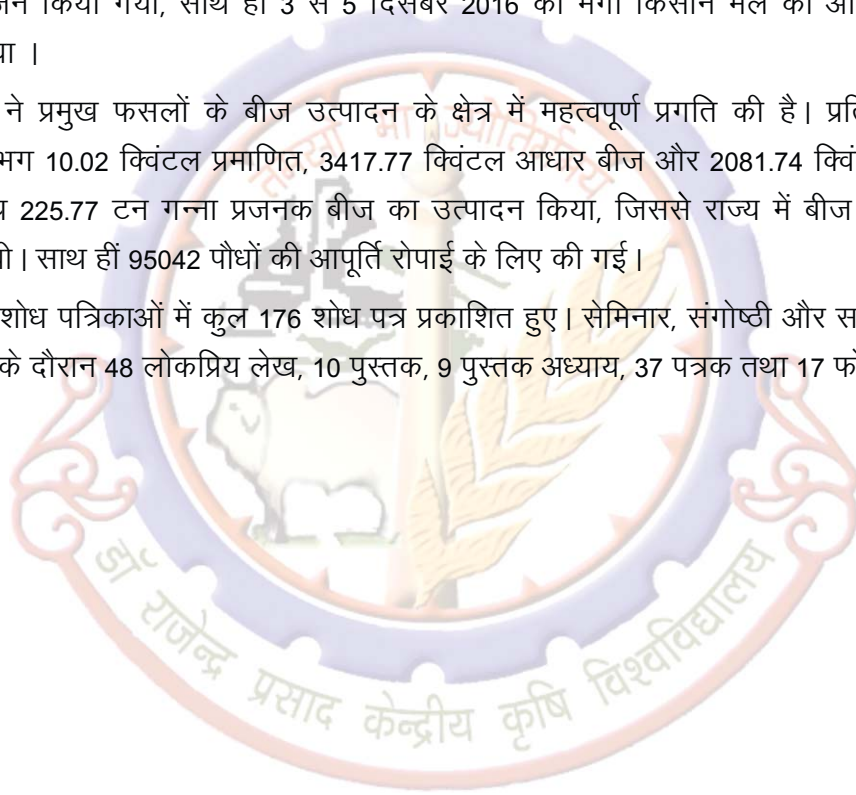
फसल सुधार कार्यक्रम के तहत विभिन्न फसलों के लगभग 5755 जर्मप्लाज्मों का रखरखाव एवं मूल्यांकन प्रजनक द्वारा किया गया। बाजरा की किस्म (राजेन्द्र कौनी- 1) और अरहर की किस्म (राजेन्द्र अरहर -1) भी बिहार राज्य के लिए जारी किए गए। धनिया की किस्म (राजेन्द्र धनिया -1) को राष्ट्रीय स्तर पर CVRC द्वारा रिलीज के लिए AICRP (मशाला) द्वारा अनुशंसित किया गया था। फसल उत्पादन/संरक्षण कार्यक्रम के तहत बिहार के कृषि-पारिस्थितिकी में विभिन्न पोषक फसलों के एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, कीट एवं रोग प्रबंधन पर कई परीक्षण किए गए।

मक्का आधारित फसल क्रम में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन पर अधिक बल दिया गया है एवं मृदा प्रबंधन के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता में सुधार पर ध्यान दिया गया है, साथ ही टाल एवं दियारा क्षेत्र में फसल की बुवाई, सीधी वोआई विधि द्वारा धान की खेती के साथ-साथ किसानों के सहयोग से दलहन उत्पादन बढ़ाने हेतु दलहन बीज उत्पादन को प्रोत्साहित किया गया है। रबी और गर्मा मक्का में दलहनी फसल की अंतरवर्ती फसल, धान-परती प्रणाली के तहत दलहन अनुसंधान तथा जल उपयोग दक्षता (प्रति बूंद अधिक फसल) को अनुकूल बनाने के लिए, भूमिगत पाइपलाइनों पर आधारित सिंचाई प्रणाली के मूल्यांकन के लिए पहल की गई है। गन्ना और दलहनी फसलों में सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली पर शोध प्रगति पर है।

किसानों के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए विश्वविद्यालय ने पर्याप्त इन्फ्रा-स्ट्रक्चर एवं कुशल प्रणाली विकसित की है। कृषि के विभिन्न पहलुओं पर मुख्यालय के विभिन्न इकाइयों के साथ-साथ कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 50388 किसानों, ग्रामीण युवाओं, और प्रसार अधिकारियों हेतु 1375 प्रशिक्षण कार्यक्रम, 3430 कृषकों के लिए 1316 हेक्टेयर में एफएलडी. और 54 OFTs का आयोजन किया गया, साथ ही 3 से 5 दिसंबर 2016 को मेगा किसान मेले का आयोजन विश्वविद्यालय मुख्यालय में किया गया।

विश्वविद्यालय ने प्रमुख फसलों के बीज उत्पादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने लगभग 10.02 क्विंटल प्रमाणित, 3417.77 क्विंटल आधार बीज और 2081.74 क्विंटल विभिन्न फसलों के प्रजनक बीज के साथ 225.77 टन गन्ना प्रजनक बीज का उत्पादन किया, जिससे राज्य में बीज उत्पादन कार्यक्रम को मजबूती प्रदान की गयी। साथ ही 95042 पौधों की आपूर्ति रोपाई के लिए की गई।

वर्ष 16-17 में शोध पत्रिकाओं में कुल 176 शोध पत्र प्रकाशित हुए। सेमिनार, संगोष्ठी और सम्मेलनों में 85 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। वर्ष के दौरान 48 लोकप्रिय लेख, 10 पुस्तक, 9 पुस्तक अध्याय, 37 पत्रक तथा 17 फोल्डर प्रकाशित हुए।



डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

संसद में वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन पेश करने में विलम्ब का विवरण

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा, समस्तीपुर के संबंध में वर्ष 2016-17 की वार्षिक प्रतिवेदन संसद के दोनों सदनों में रखी जानी थी। वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन को इस तथ्य के कारण प्रबंध बोर्ड के समक्ष नहीं रखा गया था कि डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय 7 अक्टूबर, 2016 से प्रभावी हो गया, विश्वविद्यालय का मानना था कि वर्ष 2017-18 से वार्षिक प्रतिवेदन केन्द्र सरकार को प्रस्तुत की जाएगी। 2017-18 की वार्षिक प्रतिवेदन के साथ 2018-19 और 2019-20 का वार्षिक प्रतिवेदन पहले ही प्रबंध बोर्ड द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है, जिसे माननीय कुलाध्यक्ष द्वारा अनुमोदन के लिए कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग, भारत सरकार को समर्पित किया गया है। पुनः दिशा निर्देश के अनुसार 2016-17 का वार्षिक प्रतिवेदन प्रबंध बोर्ड से अनुमोदन के पश्चात् माननीय कुलाध्यक्ष के अवलोकन हेतु DARE को सौपा गया।

संसद में वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन में विलम्ब के कारणों की विवरणी –

विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड द्वारा अनुमोदन के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	:	11.09.2020
प्रबंध बोर्ड द्वारा वार्षिक रिपोर्ट की स्वीकृति	:	22.09.2020
कुलाध्यक्ष की मंजूरी के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	:	20.03.2020
कुलाध्यक्ष की स्वीकृति की प्राप्ति	:	05.02.2021
संसद के पटल पर प्रस्तुत करने हेतु वार्षिक प्रतिवेदन की मुद्रित प्रतियों को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग को समर्पित करना		

प्रस्तावना



डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा का प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (2016-17) को इसके संक्षिप्त प्रारूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गौरव और हर्ष की अनुभूति हो रही है। विस्तृत जानकारी हेतु, संक्षिप्त प्रारूप का विस्तृत रिपोर्ट विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है। रिपोर्ट वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने अकादमिक उत्कृष्टता, प्रौद्योगिकी विकास एवं विस्तार तथा बुनियादी ढांचे के विकास सहित अन्य सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पहल की है।

विश्वविद्यालय के इतिहास में वर्ष 2016-17 चिरस्मरणीय रहेगा। इसी वर्ष राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय दिनांक 7 अक्टूबर 2016 को भारत सरकार के एक अधिसूचना द्वारा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में परिवर्तन के पश्चात् हम नये लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं, जिससे शिक्षा एवं अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में श्रेष्ठता प्राप्त कर सके, जिसका लाभ पूरे देश की आबादी को प्राप्त हो सके।

मैं इस विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष एवं भारत के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी जी, डॉ. श्री राधामोहन सिंह माननीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति प्रो. पी. के. मिश्रा जी को उनके उन्मुक्त समर्थन और मार्गदर्शन के लिए सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ। मैं डॉ. टी. महापात्रा, सचिव डेयर, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रोत्साहन और समर्थन के लिए बहुत आभारी हूँ। मैं सभी अधिष्ठाताओं, निदेशकों, रजिस्ट्रार, विभागों के प्रमुख, परियोजनाओं के पी.आई., के.वी.के. के प्रमुख, वैज्ञानिकों धशिक्षकों एवं अन्य प्रशासनिक, तकनीकी तथा सहायक कर्मचारियों को रिपोर्ट के लिए बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराने पर उनकी सराहना करता हूँ। मैं, वार्षिक रिपोर्ट 2016-17 की स-समय तैयारी और प्रकाशन के लिए विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग की पूरी टीम को बधाई देता हूँ।

Shriwastava

(डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव)

कुलपति

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)- 848125

पृष्ठभूमि :

7 अक्टूबर 2016 को भारत सरकार के आधिकारिक राजपत्र में अधिसूचना द्वारा तत्कालीन राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार को डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में बदल दिया गया। भारत के पूर्वी क्षेत्र में कृषि के विशाल क्षमता का अवलोकन करते हुए भारत सरकार ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम 2016 को पारित किया। इस विश्वविद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भारत के पूर्वी हिस्से को कृषि समृद्ध एवं कृषि विकास के लिए योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु किया गया जो आधुनिक कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के माध्यम से ही पूरा हो सकेगा। इसके स्थापना के साथ ही उन्नत कृषि और संबद्ध विज्ञानों में शिक्षा एवं अनुसंधान की घोषणा की गयी जिससे यह विश्वविद्यालय एक राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में विकास करेगा। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान और कृषि प्रसार सम्बंधित कार्यक्रमों का क्षेत्राधिकार यूं तो सम्पूर्ण देश स्तर पर किया गया है, परन्तु इसमें बिहार राज्य को विशेष तौर पर संदर्भित किया गया है।

कृषि, बागवानी, पशु चिकित्सा और संबद्ध शाखाओं में शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विश्वविद्यालय में वर्तमान में छह संकाय, पाँच सम्बंधित महाविद्यालय, सात शोध संस्थान /स्टेशन और चौदह कृषि विज्ञान केंद्र (बारह विश्वविद्यालय के अंतर्गत और दो गैर सरकारी संगठनद्ध स्थापित किये गए हैं)। 10 10 10 के 10 10 किसानों और कृषि से जुड़े समस्त लोगों के आजीविका के लिए अनुसंधान के नये विकल्पों की लगातार खोज कर रहा है। ये सभी प्रयास खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने, गरीबी हटाने और पर्यावरण की सुरक्षा हेतु किये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय की दूरदर्शिता विश्व पटल पर कृषि एवं संबंधित विज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान बनने की है।

विश्वविद्यालय कृषि एवं संबंधित विज्ञान विषयों में शिक्षा अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्रों में एक उच्च गुणवत्तापूर्ण संस्थान बनने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण कृषि शिक्षा प्रदान कर रहा है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय बौद्धिक एवं मेहनती मानव संसाधन का भी विकास कर रहा है, जिससे बिहार राज्य के लोगों को ज्यादा से ज्यादा लाभप्रद कृषि कार्यों से जोड़ा जा सके तथा उनके जीवन स्तर को सुधारा जा सके। विश्वविद्यालय बिहार राज्य एवं इसके बाहर के किसानों की कृषि आवश्यकताओं को समझने का प्रयास कर रहा है और साथ ही विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं कृषक समुदायों के बीच एक परस्पर संबंध स्थापित कर रहा है।

अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं :

- कृषि पैदावार, पशुपालन तथा मत्स्य पालन के क्षेत्र में ग्राहकों द्वारा उपयोग की जा सकने वाली उपयुक्त तकनीकों का विकास करना तथा इनसे संबंधित समस्याओं पर दूरगामी शोध प्रारंभ करना।
- कृषि उत्पादकता को बढ़ाने, किसानों की लागत को कम करने तथा पर्यावरणहितैषी तरीको से सतत पैदावार बढ़ाने हेतु नवोमेशी अनुसंधान।
- कृषि से संबंधित तात्कालिन एवं दीर्घकालीन मुद्दों को रणनीति पूर्वक एवं लक्ष्य बनाकर हल करना।
- नये शोध क्षेत्रों की पहचान करना तथा इन्हें लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होना।
- कृषि एवं संबंधित उत्पादों के मूल्यवर्धन करना।
- जलवायु परिवर्तन एवं संबंधित समस्याओं को ध्यान में रखकर कृषि कार्यों एवं शोध को प्रारंभ करना।

विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे नये प्रयास निम्नलिखित है :-

किसानों की आय को दोगुना करना : केला उत्पादकों के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली, मछली पालकों के लिए कम लागत में खाद्य सामग्री की उपलब्धता, एकीकृत मधुमक्खी पालन विकास केन्द्र की स्थापना।

हर खेत को पानी : ढाब क्षेत्रों में सौर उर्जा आधारित फ्लोटिंग पम्प प्रणाली का विकास, ताल और दियारा क्षेत्रों में सौर उर्जा आधारित पोर्टेबल पम्प प्रणाली का विकास, सब्जी की खेती करने वाले किसानों हेतु ड्रम आधारित सिंचाई प्रणाली की व्यवस्था।

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन : मक्के की फसल हेतु मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, ताल और दियारा क्षेत्रों में फसल चक्र की व्यवस्था, सीधी बुआई से धान की खेती द्वारा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण करना।

दलहन उत्पादकता को बढ़ाना : किसानों के सहयोग से दलहन बीजों का उत्पादन, रबी और ग्रीष्म मक्के में दलहन अंतर फसल प्रणाली, दलहन फसलों की अच्छी उत्पादकता हेतु शोध कार्य।

प्रत्येक बूंद ज्यादा फसल : भूमिगत पाईप लाईन आधारित सिंचाई प्रणाली का अवलोकन करना, गन्ने एवं दलहनी फसलों में सूक्ष्मसिंचाई प्रणाली पर शोध, सिंचाई के लिए स्वचालित तकनीकों का उपयोग।

1.2 विश्वविद्यालय का उद्देश्य :

- कृषि एवं संबंधित विज्ञानकी विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि एवं संबंधित विज्ञानकी विभिन्न शाखाओं में शोध कार्य करना।
- सम्पूर्ण देश विशेषकर बिहार राज्य में कृषि प्रसार कार्यक्रमों की शुरुआत करना।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करना।
- समय-समय पर कृषि आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का निष्पादन करना।

1.3 स्थान एवं जलवायु

यह विश्वविद्यालय बिहार राज्य के समस्तीपुर जिले में बूढी गंडक नदी के दक्षिण पश्चिम किनारे पर लगभग 25058"54' N अक्षांश एवं 85040"25' E पर अवस्थित है। यहां की जलवायु मुख्यतः उप उष्णकटिबंधीय है जिसमें गर्म, शुष्क वर्षात एवं ठंड का मौसम शामिल है। यहां औसत वार्षिक वर्षा 1260mm होती है जिसका 90% केवल मध्यावधि जून से लेकर अक्टूबर तक होता है। नवम्बर से आखिरी सप्ताह से लेकर फरवरी तक समान्यतः कम वर्षा होती है। मई और जून साल के सबसे गर्म महीने होते हैं तथा जनवरी सबसे ठंडा महीना होता है जिसमें उच्चतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस तथा निम्नतम तापमान 8 डिग्री सेल्सियस तक होता है।

1.4 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

भारत के इम्पेरियल गजट 1878 में पूसा को तात्कालिन दरभंगा जिले में 1350 एकड़ में फौले सरकारी सम्पदा के रूप में स्थान दिया गया था। बाद में इसे ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा फौज में इस्तेमाल होने वाले उन्नत किस्म के घोड़ों के फार्म के रूप में अधिकृत कर लिया गया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के लिये उस समय भारत में कृषि पैदावार एक समस्या थी, परिणाम स्वरूप उन्होंने पूसा क्षेत्र को एक विशाल कृषि समृद्धक्षेत्र बनाने तथा कम्पनी को राजस्व में फायदा पहुंचाने हेतु एक विकल्प के रूप में चुना। बाद के वर्षों में उपजाऊ मृदा एवं अच्छी जलवायु की मदद से उन्होंने फसलों के अनेको प्रभेदों का उत्पादन किया।

वायसराय और भारत की गवर्नर जनरल ने 4 जून 1903 को बंगाल सरकार के पास एक प्रस्ताव भेजा जिसमें पूसा के सरकारी संपदा पर एक कृषि अनुसंधान संस्थान तथा कृषि कॉलेज स्थापित करने की मांग की गई। अगस्त 1903 में यह प्रस्ताव पारित हो गया तथा इस संस्थान के प्रथम निर्देशक के पदस्थापित होने के साथ ही एक अप्रैल 1904 को पूसा प्रोजेक्ट की शुरुआत हो गई।

1 अप्रैल 1905 को प्रस्तावित संस्थान की आधारशीला रखी गई। 1905 में इस संस्था के गठन के बाद इम्पेरियल कृषि विभाग से वैज्ञानिकों की समितियों को नवनिर्मित कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा भेजा गया। फिप्स लेबोरेट्री का नामकरण इसके प्रदाता 1907 में आये हेनेरी फिप्स ऑफ यू.एस.ए. के नाम पर किया गया। संस्थान में प्रारंभ में पुस्तकालय एवं वनस्पति विज्ञान, रसायन शास्त्र, सूक्ष्म विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि एवं पशु प्रजनन आदि भवनों का निर्माण किया गया। 1911 में संस्थान का नाम "इम्पेरियल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च" (IIAR) रखा गया जिसे बाद में 1919 में इम्पेरियल एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट (IARI) कर दिया गया।

जनवरी 1934 में बिहार में आये विनाशकारी भूकम्प में फिप्स लेबोरेट्री बुरी तरह तबाह हो गया, जिसके पश्चात सरकार ने पूसा स्थित संस्थान को 1936 में नई दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया जिसे हम आज भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) के नाम से जानते हैं। दुर्भाग्यवश बिहार ने कृषि शिक्षा अनुसंधान के इस मंदिर को खो दिया। जो भवन भूकम्प के इस

त्रासदी के बाद शेष रह गए, उन्हें बिहार सरकार ने दो लाख पांच हजार की मामूली कीमत पर खरीद लिया तथा इसके एक भाग को कृषि जलवायु के अनुकूल होने के कारण भारत सरकार ने क्षेत्रीय स्टेशन के रूप में अपने पास रखा। पूसा भूखण्ड में आजादी के बाद अनेक बदलाव हुए। सरकार के गन्ना अनुसंधान संस्थान नें आजादी के बाद महत्वपूर्ण योगदान दिया। गन्ने के कई प्रभेद की उत्पत्ति इनके प्रमुख विकासों में से एक हैं।

अंततः राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना 3 दिसम्बर 1970 को की गई जिसे पटना के बिहार वेटेरिनरी कॉलेज के कैंपस से चलाया जा रहा था। 1981 में छोटा नागपुर एवं संधाल प्रगना अस्तित्व में आये। एक अलग बिरसा कृषि विश्वविद्यालय जिसका मुख्यालय राँची में था, की स्थापना हुई। राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय में उसी वर्ष “आधार विज्ञान एवं मानवीकी संकाय” की स्थापना की गई। साल 1982 में ‘कॉलेज ऑफ होम साईंस’ की स्थापना हुई। पशु विज्ञान संकाय के अंतर्गत “संजय गाँधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी” की स्थापना हुई। वर्ष 1983–84 में “कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय” की नींव रखी गई। क्रमशः 1986–87 में मत्स्यकी महाविद्यालय की स्थापना की गई। विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत कृषि संकाय के सभी परास्नातक विभागों को ढोली से पूसा मुख्यालय स्थानांतरित किया गया। विश्वविद्यालय 5 अगस्त 2010 को पुनः विभाजित हुआ तथा एक नए विश्वविद्यालय “बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर (भागलपुर)” का निर्माण हुआ।

1.5 संकाय :

कृषि संकाय : के अंतर्गत विभाग :

- कृषि विज्ञान
- कृषि अर्थशास्त्र
- कृषि वानिकी
- कीट विज्ञान
- प्रसार शिक्षा
- बागवानी
- सूत्रकृमी विज्ञान विभाग
- पौधा प्रजनन एवं अनुवांशिकी
- पौधा रोग विभाग
- मृदा विज्ञान
- बीज प्रद्योगिकी

महाविद्यालय :

तिरहुत कृषि महाविद्यालयए ढोली (मुजफ्फपुर)

कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय :

विभाग

- फार्म मशीनरी
- फार्म पावर तथा नवीकरणीय उर्जा
- सिंचाई एवं जल प्रणाली अभियांत्रिकी
- खाद्य प्रसंस्करण अभियांत्रिकी
- मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी



गृह विज्ञान महाविद्यालय :

विभाग

- खाद्य एवं सुरक्षा
- परिवार संसाधन प्रबंधन
- मानव विकास एवं परिवारिक शिक्षा
- गृह विज्ञान प्रसार तथा संचार प्रबंधन
- वस्त्र एवं परिधान डिजाईनिंग

आधार विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय :

विभाग

- कृषि बायोटेक्नोलॉजी तथा आनुवंशिक जैवविज्ञान
- वनस्पति विज्ञान एवं पादप शरीर क्रिया विज्ञान
- जैव रसायन विज्ञान
- सूक्ष्म जीव विज्ञान
- भौतिकी
- सांख्यिकी एवं गणित
- कृषि व्यवसाय प्रबंधन
- भाषा

पशु चिकित्सा विज्ञान :

- पशु उत्पादन शोध संस्थान

मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली (मुजफ्फरपुर) :

1.6 अंगीभूत महाविद्यालय

1.6.1 तिरहुत कृषि महाविद्यालय

तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली (मुजफ्फरपुर)

तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली (मुजफ्फरपुर) 18 अगस्त 1960 को बिहार के पहले मुख्यमंत्री, स्वर्गीय डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के द्वारा स्थापित किया गया था। छात्रों को फसलों के सुधार, उत्पादन और संरक्षण प्रौद्योगिकियों के आधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित किया जाता है। कॉलेज में छात्रों को उनके सर्वांगीण विकास के लिए अतिरिक्त गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

1.6.2. कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पूसा

यह महाविद्यालय पूसा में स्थित है और इसकी स्थापना 7 दिसंबर 1983 को बी.टेक और एम.टेक के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, डिग्री, बुनियादी और अनुप्रयुक्त शोध करने के उद्देश्य के साथ की गई थी। इसके मुख्य उद्देश्यों में कृषि इंजीनियरिंग के विभिन्न पहलुओं को विकसित करना, किसानों और उद्यमियों के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकसित करना शामिल हैं।

1.6.3. आधार विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय

आधार विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय को आधार विज्ञान की बुनियादी समझ को विकसित करने के उद्देश्य से

नवंबर, 1981 में स्थापित किया गया। इस कॉलेज में आठ विभाग 'जेनेटिक्स, बॉटनी और प्लांट फिजियोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री, सांख्यिकी, गणित और कंप्यूटर अनुप्रयोग, माइक्रोबायोलॉजी, रसायन विज्ञान, भौतिकी और भाषा हैं। चार वर्षीय बी.टेक (बायोटेक्नोलॉजी) कार्यक्रम, डीबीटी प्रायोजित एम.एस.सी में कृषि जैव प्रौद्योगिकी कार्यक्रम, कृषि व्यवसाय प्रबंधन में परास्नातक डिग्री कार्यक्रम जैसे नए डिग्री कार्यक्रम की शुरुआत के साथ इसे और मजबूत किया गया।

1.6.4. मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली

मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली की स्थापना 13 जनवरी 1987 को मत्स्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी में स्नातक कोर्स के साथ हुई थी, जिसके उद्देश्यों में मत्स्य पालन के क्षेत्र में अनुसंधान, मछली का उत्पादन और जल निकाय की उत्पादकता बढ़ाना मत्स्य उत्पादों का प्रासंगिक वैज्ञानिक प्रसार करने, मछली पालकों और किसानों के लिए उन्नत तकनीक विकसित करना शामिल है। साथ ही मत्स्य पालन में गुणवत्ता और विभिन्न मूल्य वर्धन हेतु तकनीक विकास की ओर अग्रसर है।

1.6.5. गृह विज्ञान महाविद्यालय, पूसा

गृह विज्ञान महाविद्यालय वर्ष 1982 में स्थापित किया गया था। इसके प्रमुख उद्देश्यों में व्यक्ति विकास, परिवारों और समुदाय की भलाई के साथ साथ अन्य शैक्षणिक उत्कृष्टता, जहां युवा महिलाएं परिवार की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए तैयार की जाती हैं। विभिन्न क्षेत्रों में 6 महीने की अवधि के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम का आयोजन भी किया गया। महाविद्यालय में पांच विभाग हैं— गृह विज्ञान विस्तार और संचार प्रबंधन, परिवार संसाधन प्रबंधन, वस्त्र और परिधान डिजाइनिंग, खाद्य और पोषण और मानव विकास और परिवार अध्ययन। इन सभी विभागों में सुसज्जित प्रयोगशालाएं और कॉलेज में छात्र-छात्राओं और प्रशिक्षुओं के लिए आरामदायक छात्रावास की व्यवस्था की गयी है।

1.7 अकादमिक कार्यक्रम

1.7.1 स्नातक कार्यक्रम

क्र.सं.	डिग्री कार्यक्रम	सीटों की संख्या		
		RAU	ICAR	Total
1.	कृषि (B.Sc.Ag.)	51	09	60
2.	कृषि अभियांत्रिकी (B.Tech.)	21	04	25
3.	गृह विज्ञान (B.Sc. H.Sc.)	21	04	25
4.	मत्स्य विज्ञान (B.F.Sc.)	21	04	25
5.	बायोटेक्नोलॉजी (B.Tech.)	25	05	30
कुल :		139	26	165

1.7.2 परास्नातक कार्यक्रम

क्र.सं.	विषय	सीटों की संख्या			
		RAU(75%)	ICAR(25%)	In-Service	Total
1.	कृषि बायोटेक्नोलॉजी और आणविक जैव विज्ञान (ABMB)	02	11 (DBT)"	01	14
2.	कृषि अर्थशास्त्र	06	02	02	10
3.	कृषि सांख्यिकी	02	—	01	03
4.	कृषि-विज्ञान	10	04	04	18
5.	बॉटनी और प्लांट फिजियोलॉजी (BPP)	03	01	01	05

6.	कीट-विज्ञान	06	02	02	10
7.	प्रसार शिक्षा	05	01	02	08
8.	प्रसार शिक्षा और संचार प्रबंधन (EECM)	04	01	—	05
9.	परिवार संसाधन प्रबंधन (FRM)	02	—	—	02
10.	खाद्य और पोषण (F.N)	02	01	—	03
11.	सूत्रकृमि विज्ञान	01	—	01	02
12.	प्लांट ब्रीडिंग एंड जेनेटिक्स (PBG)	09	02	01	12
13.	प्लांट पैथोलॉजी	06	02	02	10
14.	प्रसंस्करण और खाद्य इंजीनियरिंग (PFE)	02	—	01	03
15.	मृदा और जल इंजीनियरिंग (SWE)	03	01	01	05
16.	मृदा विज्ञान	06	01	01	08
17.	एम.बी.ए (कृषि-व्यवसाय)	30	—	—	30
18.	बागवानी	03	—	—	03
Total :		102	2010 (DBT)	20	152

*Note : कृषि बायोटेक्नोलॉजी कार्यक्रम में 10 छात्रों का चयन JNU एंट्रेंस परीक्षा के माध्यम से हुआ—

1.7.3 पी.एच.डी. कार्यक्रम

क्र.सं. विषय	सीटों की संख्या			
	RAU (75%)	ICAR (25%)	In-service	Total
1. कृषि बायोटेक्नोलॉजी	02	01	01	04
2. कृषि अर्थशास्त्र	01	01	01	03
3. कृषि-विज्ञान	03	01	02	06
4. कीट-विज्ञान	02	01	01	04
5. प्रसार शिक्षा	01	01	01	03
6. प्लांट ब्रीडिंग एंड जेनेटिक्स	03	01	02	06
7. प्लांट पैथोलॉजी	02	01	02	05
8. प्लांट फिजियोलॉजी	01	01	01	03
9. मृदा विज्ञान	03	01	03	07
Total :	18	09	14	41

1.8 विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश

केंद्रीय विश्वविद्यालय में रूपांतरण के साथ सभी सीटों को एक साथ विलय कर दिया जाएगा और शैक्षणिक वर्ष 2017-18 से ICAR-AIJEEA के माध्यम से भरा जाएगा।

1.9 अनुसंधान संस्थान / स्टेशन

1.9.1 गन्ना अनुसंधान संस्थान :

गन्ना अनुसंधान संस्थान, पूसा 1937 में अपनी स्थापना के बाद से राज्य में चीनी उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से बिहार में गन्ने की खेती की दिशा में काम कर रहा है। यह अब जटिल चुनौतियों का सामना करने और बिहार में गन्ना किसानों के कल्याण के लिए घरेलू और वैश्विक अवसरों का दोहन करने के लिए नए सिरे से आगे बढ़ने की परिकल्पना करता है। संस्थान में विभिन्न विभाग हैं जैसे गन्ना प्रजनन, सस्य विज्ञान, मृदा विज्ञान, एन्टोमोलॉजी, प्लांट पैथोलॉजी, सांख्यिकी और अर्थशास्त्र। संस्थान ने अच्छी तरह से वैरिएटल सुधार कार्यक्रम विकसित किया है और हाल ही में बी.ओ. 112 और सी.ओ. 154 किस्म जारी की है।

1.9.2 पशु उत्पादन शोध संस्थान :

1961 में स्थापित संस्थान में डेयरी यूनिट है जिसमें मवेशी और भैंस, बकरी इकाई और पोल्ट्री यूनिट शामिल हैं। 236 एकड़ ढाब भूमि के साथ एक चारा उत्पादन इकाई सह-अस्तित्व में है। शिक्षण के अलावा, यह पशु आहार, प्रजनन और चारा पर अनुसंधान कार्यक्रम भी करता है। यह संस्थान स्वच्छता पर प्रशिक्षण और सामान्य बीमारियों के खिलाफ उपाय भी प्रदान किए जाते हैं।

1.9.3 क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन, माधोपुर :

यह अनुसंधान केंद्र राज्य के प्रमुख गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में से एक है, जहाँ अधिकांश चीनी कारखाने स्थित हैं। स्टेशन प्रशिक्षण और मृदा परीक्षण के साथ-साथ विभिन्न अनुसंधान गतिविधियाँ भी करता है।

1.9.4 गहरे पानी के धान के लिए क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन :

यह स्टेशन मुख्य रूप से जलमग्न सहिष्णुता के लिए धान की विविधता पर शोध करता है। बोरो धान की खेती में मानकीकरण और उन्नयन भी यहां की जाती है।

1.9.5 बाढ़ प्रभावित धान के लिए क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन :

फ्लैश फ्लड के खिलाफ अपनाई जाने वाली विभिन्न पद्धतियों एवं विधाओं पर काम करता है एवं उनके प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए अध्ययन किया जाता है। भूमि के अनुकूलन के लिए विभिन्न एकीकृत कृषि प्रणालियों का भी अध्ययन किया जाता है।

1.9.6 बागवानी अनुसंधान स्टेशन :

लगभग 60 हेक्टेयर क्षेत्र के साथ, स्टेशन में आम, लीची और आँवला जर्मप्लाज्म का समृद्ध संग्रह किया गया है।

1.9.7 केला अनुसंधान केंद्र :

यह अनुसंधान केन्द्र केले की फसल पर आधारित अनुसंधान की आवश्यकता के लिए जिम्मेदार होगा और राज्य के लोगों की स्थायी पोषण, आर्थिक और पारिस्थितिक सुरक्षा के लिए अनुसंधान प्रसार करेगा। यह केंद्र बहुत जल्द शुरू होने वाला है। यह केंद्र न केवल उक्त संवर्धन के माध्यम से गुणवत्ता वाले रोपण सामग्री प्रदान करेगा, बल्कि केले की खेती के विभिन्न पहलुओं पर भी ध्यान देगा।

1.10 कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)

- कृषि विज्ञान केंद्र, खोदावंदपुर (बेगूसराय)
- कृषि विज्ञान केंद्र, सरैया (मुजफ्फरपुर)
- कृषि विज्ञान केंद्र, जाले (दरभंगा)
- कृषि विज्ञान केंद्र, हरिहरपुर (वैशाली)
- कृषि विज्ञान केंद्र, भगवानपुर हाट (सीवान)

- कृषि विज्ञान केंद्र, माधोपुर (पश्चिम चंपारण)
- कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली (समस्तीपुर)
- कृषि विज्ञान केंद्र, सारण
- कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालगंज
- कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी (पूर्वी चंपारण)
- कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर
- कृषि विज्ञान केंद्र, मुरौल (मुजफ्फरपुर)
- कृषि विज्ञान केंद्र, सीतामढ़ी (गैर सरकारी संगठन के साथ)
- कृषि विज्ञान केंद्र, मधुबनी (एनजीओ के साथ)

1.11 विश्वविद्यालय के विभिन्न निकाय

1.11.1 शैक्षणिक परिषद के सदस्यों की सूची

क्र.सं.

- 1 कुलपति, पदेन अध्यक्ष, रा.प्र.के.कृ.वि. पूसा
- 2 विश्वविद्यालय के कॉलेज के सभी अधिष्ठाता, पदेन सदस्य
- 3 विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक, पदेन सदस्य
- 4 विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा, पदेन सदस्य
- 5 निदेशक शिक्षा, पदेन सदस्य
- 6 कुलपति द्वारा नामित विश्वविद्यालय सदस्य
डॉ. एम. एन. झा—विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष
- 7 विश्वविद्यालय के बाहर के दो प्रख्यात वैज्ञानिक
डॉ. जे. के. सिंह, सोबरीगिन – 4, बाटिका सिटी सेक्टर – 49, गुरुग्राम – 122 018 (हरियाणा)
डॉ. नारायण ऋषि
सलाहकार, एम.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी एंड
इंडोलॉजी, एम.टी. यूपी विश्वविद्यालय, सेक्टर – 25, नोएडा – 2013 313
- 8 07 विभागाध्यक्ष – कुलपति द्वारा नामित
अध्यक्ष – सस्य विज्ञान
अध्यक्ष – पादप प्रजनन एवं अनुवांशिकी
अध्यक्ष – पादप – रोग विज्ञान
अध्यक्ष – प्रसंस्करण और खाद्य अभियंत्रण
अध्यक्ष – कृषि जैव प्रौद्योगिकी और आणविक जीवविज्ञान
अध्यक्ष – खाद्य और पोषण
अधिष्ठाता—सह—प्राचार्य
- 9 कुलसचिव, सदस्य सचिव

2. प्रमुख उपलब्धियां

2.1. शिक्षा एवं शैक्षिक गतिविधियाँ

प्रवेश एवं उत्तीर्ण छात्र छात्राओं का संकलन

डिग्री कार्यक्रम	छात्र प्रवेश			ऑनरोल छात्र			छात्र उत्तीर्ण		
	M	F	Total	M	F	Total	M	F	Total
स्नातक	46	73	119	178	168	346	34	42	76
परास्नातक	68	45	113	100	80	180	23	23	46
पी.एच.डी.	8	8	16	18	15	33	3	3	6
Total	122	126	248	296	263	559	60	68	128

2.1.2 थीसिस अवार्ड –

रिपोर्ट वर्ष के दौरान छात्रों के द्वारा कुल 06 पी.एच.डी. थीसिस और 22 परास्नातक थीसिस जमा किये गये।

2.2 अनुसन्धान

समस्या केन्द्रित अनुसन्धान प्रोजेक्ट

1. पूर्वी भारत में कृषि आकार, जलवायु मिट्टी की उर्वरता की स्थिति और किसान संसाधन बंदोबस्ती के तहत मक्का उत्पादन प्रणालियों में उन्नत पोषक तत्व प्रबंधन पद्धतियों/प्रथाओं के कृषि, आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लाभ।
2. गेहूं में मिट्टी की नमी की मात्रा में अस्थायी भिन्नता पर हाइड्रोजेल अनुप्रयोग के प्रभाव।
3. टमाटर में मिट्टी की नमी की मात्रा में अस्थायी भिन्नता पर हाइड्रोजेल अनुप्रयोग के प्रभाव।
4. ग्रामीण महिला किसानों की सामाजिक-शारीरिक स्थिति उनके प्रदर्शन, समय और कथित परिश्रम के संदर्भ में कृषि गतिविधियों की सूची विकसित करना।
5. बिहार की कैल्शियम युक्त मिट्टी में मिट्टी की उर्वरता, उपज और गन्ने की गुणवत्ता पर वर्मीकम्पोस्ट और उर्वरक के स्तर का प्रभाव।
6. बिहार में चावल-गन्ना-गेहूं की फसल प्रणाली के लिए एकीकृत माइक्रोन्यूट्रिएंट की सिफारिश।
7. उत्तर बिहार में जल भराव की स्थिति में गन्ने की उत्पादकता और चीनी की रिकवरी में वृद्धि।
8. मुजफ्फरपुर जिले के किसानों के बीच जैव-उर्वरक उत्पादन तकनीक को लोकप्रिय बनाना।
9. मृदा परीक्षण योजना।
10. लवणीय मिट्टी में तनाव सह्य धान के जीनोटाइप की स्क्रीनिंग।
11. तनाव सह्य की स्थिति में धान की किस्मों की जांच।
12. धान-गेहूं की फसल प्रणाली में कम वर्षा वाले धान के तहत फसल प्रबंध एवं पोषक तत्वों की सिफारिश।

2.2.3 जारी की गयीं फसल प्रभेदों (किस्में)

- फॉक्सटेल बाजरा किस्म राजेंद्र कौनी को सेंट्रल वैरायटी रिलीज कमेटी (CVRC) के माध्यम से जारी किया गया।
- अरहर की एक किस्म राजेन्द्र अरहर-1 स्टेटवैरायटी रिलीज कमेटी (SVRC) द्वारा जारी किया गया।

- धनिया की एककिस्म राजेंद्र धनिया – 1 को राष्ट्रीय स्तर पर सेंट्रल वैरायटी रिलीज कमेटी (CVRC) से जारी करने के लिए मसाले पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजना (AICRP) द्वारा अनुशंसित किया गया।

15.2. भारत सरकार के अंतर्गत चल रही परियोजनाएं

भारत सरकार के द्वारा वित्तपोषित कुल 13 परियोजनाएं अभी चलायी जा रही हैं।

15.3. बिहार सरकार के अंतर्गत चल रही परियोजनाएं

भारत सरकार के द्वारा वित्तपोषित कुल 18 परियोजनाएं अभी चलायी जा रही हैं।

15.4 अन्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएं

अन्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित कुल 05 परियोजनाएं अभी चलायी जा रही हैं।

15.5 विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएं

विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित कुल 30 परियोजनाएं अभी चलायी जा रही हैं।

15.6 विदेशी सहायता प्राप्त परियोजनाएं

विदेशी सहायता प्राप्त कुल 05 परियोजनाएं अभी चलायी जा रही हैं।

15.7 वर्ष के दौरान स्वीकृत परियोजनाएं (2016–17) – 03

2.3. प्रसार

2.3.1 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सारांश

प्रशिक्षुओं की श्रेणी	प्रशिक्षण की संख्या		प्रतिभागियों की संख्या	
	संख्या	पुरुष	स्त्री	कुल
प्रतिभागी किसान / कृषक महिलाये	796	18669	4036	22705
ग्रामीण युवा	307	4952	3553	8505
प्रसार समारोह	143	5572	606	6178
अन्य प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम	95	9630	1203	10833
अन्य इकाइयों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण	34	0	0	2378
कुल	1375	38823	9398	50599

2.3.2 विभिन्न इकाइयों और कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा एफ.एल.डी. का सारांश

आयोजन	क्षेत्र (हेक्टेयर)	प्रतिभागियों की संख्या
इकाइयों	120.25	450
कृषि विज्ञान केन्द्र	1206.24	4219
कुल	1326.49	4669

2.3.3 विभिन्न इकाइयों और कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किये गए ओ.एफ.टी. का सारांश

आयोजन	ट्रायल की संख्या	प्रतिपुष्टि
इकाइयाँ	10	60% अपनाया गया
कृषि विज्ञान केन्द्र	468	किसान अपना रहे हैं
कुल	478	60% अपनाया गया

2.3.4 नए कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना

नए कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके)/ यूनिट का नाम	स्थान	जिला	स्थापना की तिथि
कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरौल	मुरौल	मुजफ्फरपुर	संचिका संख्या. A.Ext.6/7/2016.AE.1 Dated 21st Dec., 2016

टीवी और रेडियो वार्ता

हमारे वैज्ञानिकों/शिक्षकों के द्वारा नियमित रूप से कृषि और इसकी संबद्ध शाखाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर राज्य के विभिन्न स्टेशनों से 50 टीवी और 09 रेडियो वार्ताएं प्रसारित की गईं।

बीज और अन्य उत्पादन

2.4.1 बीज उत्पादन

फसल	बीज प्रजनक	आधार बीज	प्रमाणित बीज	फायदेमंद बीज
धान	559.55	1771.21	0	74.00
उड़द	00.88			
रागी	01.25			
मूंग	18.45			
गेहूँ	1377.02	1360.38	0	0
मक्का	11.0			
राजमा	07.78			
मसूर	21.65	173.79	10.02	5.10
काबुली चना	19.48	62.84		
मटर	46.85	7.82		
अरहर	14.23	24.94		
तेल का बीज	3.60	16.79	0	0
कुल	2081.74	3417.77	10.02	79.10

2.4.3. गन्ना प्रजनक बीज

इकाई का नाम	फसल	बिक्री की मात्रा (टन में)	मूल्य (रु. में)
ईख अनुसन्धान संस्थान, पूसा	गन्ना	12.62	504800
कल्याणपुर	गन्ना	9.95	398300
कुल		22.57	903100

2.4.4 इकाइयों द्वारा उत्पादित रोपण सामग्री

कुल 32052 819658

2.4.5 कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा उत्पादित रोपण सामग्री

इकाई का नाम/कृषि विज्ञान केन्द्र	फसल	उत्पादन	मूल्य (रु. में)
दरभंगा	पपीता	1342	13420
	आम	910	45500
	लीची	50	1500
	अमरुद	100	3000
समस्तीपुर	अमरुद	14270	428100
	लीची	619	18570
	आम	4824	241200
	बेल	227	6810
	आवैला	309	12360
	बेर	45	675
	मौसमी	95	1900
	जामुन	115	1725
	अनार	159	2385
	निम्बू	342	6840
	क्रोटोन	23	345
	निम्बू	42	630
	क्रोटन	42	630
	सिवान	रूटस्टॉक आम	2000
वैशाली	आम	3388	169400
	अमरुद	201	6020
	निम्बू	05	100
सीतामढ़ी	आम	10000	600000
	आम (अंकुरित)	10000	60000
	सब्जी	6000	6000
मधुबनी	आम	306	22450
	अमरुद	147	1425
	निम्बू	176	1650
	लीची	163	8150
	कुल	55900	1660785
कुल योग (इकाई एवं कृषि विज्ञान केन्द्र)		96275	2861548

2.4.6 गैर-बीज गन्ना

इकाई का नाम	फसल	मात्रा (q)	मूल्य (रु. में)
ईख अनुसन्धान संस्थान, पूसा	गन्ना	760.70	214948

2.4.7 गुड़ उत्पादित

इकाई का नाम	गन्ने की पेराई की मात्रा (कि.ग्रा.)	उत्पादित गुड़ की मात्रा (कि.ग्रा.)	मूल्य (रु. में)
ईख अनुसन्धान संस्थान, पूसा	178.90	14.50	68450

2.4.8 शहद उत्पादित

इकाई का नाम/कृषि विज्ञान केंद्र	प्रकार	मात्रा	मूल्य (रु. में)
मधुमक्खी पालन इकाई, पूसा	जामुन	150कि.ग्रा	37500
	बहुविकल्पी	100कि.ग्रा	25000
	सरसों	288 कि.ग्रा	72000
	लीची	471 कि.ग्रा	117750
	कुल योग	1009 कि.ग्रा	252250
कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली, समस्तीपुर	लीची	69 कि.ग्रा	17250
	कुल	1078 कि.ग्रा	269500

2.4.9 दूध उत्पादित

इकाई का नाम/कृषि विज्ञान केंद्र	प्रकार	मात्रा (लि.)	मूल्य (रु.में)
पशु उत्पादन शोध संस्थान, पूसा	भैंस	22113.50	729745.50
	गाय	106756.50	3309451.50

2.4.10 स्पॉन का उत्पादन

इकाई का नाम/कृषि विज्ञान केंद्र	प्रकार	मात्रा	मूल्य (रु.में)
मशरूम सेंटर एरा.प्र.के.कृ.वि., पूसा	सीप, बटन और दुधिया	386 kg	34740
कृषि विज्ञान केंद्र,	मशरूम स्पॉन	200 kg	12000

2.4.11 कृमि खाद

इकाई का नाम/कृषि विज्ञान केंद्र	प्रकार	मात्रा	मूल्य (रु.में)
कृमि खाद इकाई, पूसा	कृमि खाद	91732 kg	550913
	केंचुआ	41000 kg	12300

2.4.12 जैव उर्वरक का उत्पादन

इकाई का नाम/कृषि विज्ञान केंद्र	प्रकार	मात्रा	मात्रा
जैव उर्वरक उत्पादन इकाई, मृदा विज्ञान विभाग, तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली	राइजोबियम/ एजोटोबैक्टर/ पी.एस.बी.	26194 pkt.	221212

3. छात्रों की कल्याण गतिविधियाँ

3.1 खेल और खेल गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों द्वारा वर्ष के दौरान अंतर-सेमेस्टर खेलों और खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अंतर-सेमेस्टर टूर्नामेंट के दौरान उनके प्रदर्शन के आधार पर, लड़कों और लड़कियों को अलग-अलग कार्यक्रमों के लिए कॉलेज टीम का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया और उन्होंने स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार में आयोजित इंटर-कॉलेज गेम्स एंड स्पोर्ट्स मीट में दिनांक 6 से 8 मार्च, 2017 तक भाग लिया।

वॉलीबॉल (छात्रों), टेबल टेनिस (छात्रों एवं छात्राओं), बैडमिंटन (लड़के एवं लड़कियों) और कबड्डी (लड़के और लड़की) टूर्नामेंट के साथ-साथ लड़कों और लड़कियों के लिए एथलेटिक स्पर्धाओं का भी आयोजन गेम्स एंड स्पोर्ट्स मीट के दौरान किया गया।

इंटर कॉलेज गेम्स और स्पोर्ट्स मीट की पदक तालिका :

कॉलेज / संकाय	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
कुल	22	22	22	66

3.1.1. 2016-17 में एग्री-यूनीफेस्ट में सहभागिता

राजस्थान ऑल इंडिया इंटर एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी यूथ फेस्टिवल (AGRI.UNIFEST, 2016-17) की मेजबानी राजस्थान पशुपालन विश्वविद्यालय बीकानेर, राजस्थान द्वारा 22 से 25 फरवरी, 2017 तक की गई। विश्वविद्यालय के टीम जिसमें 22 छात्रों ने लाइट वोकल, देशभक्ति गीत (संगीत), क्विज, योग, वाद-विवाद, एक्सपेम्पोर (साहित्यिक), मोनो.एक्टिंग, माइम (थिएटर), कोलाज, पोस्टर मेकिंग, क्ले मॉडलिंग, कार्टूनिंग और ग्रुप डांस इत्यादि जैसे 13 विषयों में हिस्सा लिया।

3.1.2 अखिल भारतीय अंतर कृषि विश्वविद्यालय सम्मेलन में भागीदारी

विश्वविद्यालय की 20 लड़कों और 18 लड़कियों की टीम ने 17 वीं ऑल इंडिया इंटर एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी गेम्स एंड स्पोर्ट्स मीट (2016-17) में भाग लिया, जो 22 से 26 मार्च, 2017 तक हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में आयोजित किया गया। बालिका टेबल टेनिस टीम का प्रदर्शन उल्लेखनीय था और टीम क्वार्टरफाइनल चरण तक पहुंच गई। छात्रों की टेबल टेनिस टीम ने भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और चौथे राउंड तक पहुंची। छात्राओं की बैडमिंटन टीम ने भी तीसरे दौर में अपनी पहुँच बनाई।

3.2. सांस्कृतिक और वाद-विवाद कार्यक्रम

विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस (3 दिसंबर 2016) के अवसर पर पूसा और उसके आसपास के स्कूली छात्रों के बीच साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए और इस वर्ष को 'कृषि शिक्षा दिवस' के रूप में मनाया गया।

3.3. राष्ट्रीय कैडेट कोर गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय कैडेट कोर इकाई के 55 कैडेटों ने एक एन.सी.सी. अधिकारी के साथ नियमित कक्षाओं और परेडों के अलावा, उन्होंने स्वतंत्रता दिवस समारोह, गणतंत्र दिवस समारोह और कॉलेज और विश्वविद्यालय के विभिन्न समारोह में भाग लिया।

3.4. प्रशिक्षण और कैम्पस प्लेसमेंट

प्लेसमेंट सेल छात्रों के ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप, परियोजना एवं प्रशिक्षण के साथ-साथ अंतिम प्लेसमेंट के लिए विभिन्न संगठनों के बीच एक अंतरफलक के रूप में कार्य करता है। रिपोर्ट किए गए वर्ष के दौरान, 22 छात्रों को नियुक्त किया गया और 9 छात्रों को विभिन्न संगठनों द्वारा प्रशिक्षण के लिए चुना गया।

3.5. छात्रावास

विश्वविद्यालय विशुद्ध रूप से आवासीय है, जहाँ अंडर-ग्रेजुएट, पोस्ट-ग्रेजुएट और पीएचडी के विभिन्न कार्यक्रमों में सभी छात्र और छात्राओं को छात्रावास में रहने के लिए प्रवेश दिया जाता है, साथ ही उन्हें सामान्य कमरे और मेस सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं। हॉस्टल की देख-रेख प्रबंधन निदेशक, छात्र कल्याण, अधिष्ठाता-सह-प्राचार्य, वार्डन और हॉस्टल अधीक्षक के माध्यम से किया जाता है।

3.6 फ़ैलोशिप / छात्रवृत्ति

विश्वविद्यालय में दिए गए अधिनियमों के तहत किए गए प्रावधानों के अनुसार, स्नातकोत्तर के 55 छात्र और 19 पी.एच.डी. के छात्रों को क्रमशः 3000 रु और 4500 रुपये की जूनियर और सीनियर फ़ैलोशिप से सम्मानित किया गया। 27 स्नातक के छात्रों को रावे (RAW) कार्यक्रम के तहत कुल 13000 रु. की राशि प्रदान की गई।

4. विश्वविद्यालय पुस्तकालय

पूसा मुख्यालय स्थित विश्वविद्यालय पुस्तकालय, मुख्य परिसर के वैज्ञानिकों, शिक्षकों, प्रसार विशेषज्ञों, छात्रों और कर्मचारियों के साथ-साथ अनुसंधान स्टेशनों, उप-स्टेशनों और विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक कर्मचारियों की पठन पाठन एवं अनुसंधान सम्बंधित जरूरतों को पूरा करता है।

खुलने का समय :	सुबह 08.00 बजे से शाम 06 बजे तक
परिसंचरण समय	10.00 बजे से 04.30 बजे तक
छात्र प्रबंधित पठन कक्ष :	प्रातः 0 6.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक
पुस्तकालय में दस्तावेज (31.03.2017 को) :	74604
वर्ष के दौरान परिवर्धन	
31.03.2014 तक पुस्तकें :	72050
खरीदी गई पुस्तकें :	01567
निःशुल्करूपुस्तकें :	00028
छात्रों द्वारा शोध प्रबंध :	00059

कुल जोड़ : **01654**

ई-बुक्स : कैब ई-बुक्स का निरंतर सब्सक्रिप्शन
(आईपी प्रमाणित)

ए.एस.ए.पी. ई-बुक्स (भारतीय) आईपी की निरंतर प्रमाणित (मार्च 2017 से)

भारतीय जर्नल्स की खरीद : **कोई नहीं**

उपलब्ध सीडी रोम डेटाबेस :

1. कैब एब्सट्रैक्ट (1984 – 2013)
2. क्रॉप-सीडी (1973-2003)
3. कैब पेस्ट सीडी (1973.2004)

4. एग्रिस सीडी (1991 – 2003)
5. एग्रीकोला (1984 – 2003)
6. कैब सैक (1973 – 1997)
7. खाद्य और पोषण सीडी. CD (1975–2004)

पुस्तकों का परिचलन :

निर्गमित की गई पुस्तकें :	4653
लौटाई गई पुस्तकें :	5380
कुल :	10033

वर्ष के दौरान पंजीकृत पाठकों की संख्या :

शिक्षक / वैज्ञानिक :	059
परास्नातक छात्र :	186
स्नातक छात्र :	161
कर्मचारी :	015
कुल :	421

वर्ष के दौरान आगंतुकों की संख्या :

छात्र और अन्य :	22973
शिक्षक / वैज्ञानिक :	00862
कुल :	23835

कंप्यूटर केंद्र में आगंतुकों की संख्या :	6517
उत्पादित फोटोकॉपी की संख्या :	80473+12605
उत्पादित कंप्यूटर प्रिंटआउट की संख्या :	15451

प्रदान की गई सेवाएं :

1. कैब सार सेवा
2. फोटोकॉपी सेवा
3. कंप्यूटर प्रिंटआउट सेवा
4. संदर्भ सेवा
5. दस्तावेज वितरण सेवा – सेरा

कर्मचारियों की संख्या :

पुस्तकालय पेशेवर :	5
सहायक कर्मचारी :	9
आकस्मिक / संविदा कर्मी :	3
पी.जी.एस. 501	

पुस्तकालय एवं सुचना विज्ञान सेवा कोर्स :

वार्षिक खाता

अप्रैल 2016 से मार्च 2017 की अवधि के दौरान आय और व्यय

क्र.सं.	आय का विवरण		व्यय का विवरण		जमा शेष
1	2	3	4	5	6
	जमा रोकड़	0			
1	भारत के सरकार से प्राप्त				
2	ग्रंट इन ऐड सैलरी	300000000	मुख्यालय	300000000	Nil
3	ग्रंट इन ऐड जनरल	60032000	मत्स्यकी महा. ढोली	1742180	Nil
			मुख्यालय	44756559	
			ति.कृ.महा. ढोली	4435635	
			आ.वि. एवं मा.वि.	1420500	
			निदेशक बीज, ढोली	1560000	
			कृषि संकाय	290000	
			लाइव स्टॉक यूनिट	5045126	
			विद्युत अभियन्त्रण	782000	
			कुल योग	60032000	
4	ग्रंट इन ऐड कैपिटल	850000000	निदेशक कार्य और संयंत्र	79000000	Nil
			पुस्तकालय	6000000	
	कुल	445032000		85000000	
	कुल योग	445032000		445032000	Nil

पुरस्कार / मान्यताएँ

डॉ. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, माननीय कुलपति, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा को चार पुरस्कार मिले :

1. उच्च शिक्षा नेतृत्व पुरस्कार
2. देवांग मेहता राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार
3. अंडमान विज्ञान संघ द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड
4. सी.एस.आई.आर.एन.बी.आर.आई, लखनऊ में कृषि और खाद्य समावेशी विकास और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

इसके अलावा विश्वविद्यालय के विभिन्न शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों को उनके उत्कृष्ट अनुसन्धान कार्यों के लिए विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों एवं संस्थानों द्वारा 14 पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया।

9. संगोष्ठी / संगोष्ठी / प्रशिक्षण / कार्यशालाओं का आयोजन

17 अलग-अलग सेमिनार, संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के विभिन्न संकाय एवं महाविद्यालयों के सदस्यों द्वारा किया गया।

10. राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय / सेमिनार / संगोष्ठी / सम्मेलन / शॉर्ट कोर्स / ट्रेनिंग / समर स्कूल / विंटर स्कूल / रेफरल स्कूल में वैज्ञानिकों की भागीदारी

कुल 91 संकाय सदस्यों ने राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठीयों एवं सम्मेलनों में भाग लिया।

11. शोध पत्र प्रकाशित

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों द्वारा कुल 176 रिसर्च पेपर्स और बुक चैप्टर प्रकाशित, इसके अलावा 48 लोकप्रिय लेख प्रकाशित किये गए।

गणमान्य व्यक्तियों का आगमन

श्री राम नाथ कोविंद, बिहार के माननीय राज्यपाल

श्री राधामोहन सिंह, माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, सरकार भारत

श्री रामबिलास पासवान, माननीय केंद्रीय मंत्री, सरकार भारत

श्री नीतीश कुमार, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार

श्री राम कृपाल यादव, माननीय केंद्रीय मंत्री, सरकार भारत

डॉ. हुकुमदेव नारायण यादव, माननीय सांसद, लोकसभा

डॉ. ए.के. सिंह, डीडीजी (प्रसार), भा.कृ.अनु.प, नई दिल्ली

डॉ. एच. पी. सिंह, पूर्व डी.डी.जी., बागवानी

डॉ. एन.एन. सिंह, पूर्व कुलपति, बीएयू, रांची

डॉ. एच.एस. गुप्ता, महानिदेशक, बी.आई.एस.ए.

डॉ. अरविंद कुमार अग्रवाल, कुलपति, सी.एयू, मोतिहारी

डॉ. मान सिंह, संयुक्त निदेशक, सरकार, भारत

लीना कोएस्टर, हैम्बर्ग, जर्मनी

विलियम सीकर, डेनमार्क

डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, निदेशक एन.डी.आर.आई., करनाल

वोल्फगैंग एच. पीटर, प्रोफेसर, हार्वेस्ट प्लस

डॉ. पी.विजया कुमार, परियोजना समन्वयक, (AgAMetA), CRIDA, हैदराबाद

बीनू चेरियन, प्रोफेसर, हार्वेस्टप्लस

डॉ. जे.के. चौहान, सलाहकार, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. वी. पी. चहल, एडीजी एक्स, भा.कृ.अनु.प, नई दिल्ली

डॉ. पी.एस. पांडे ए.डी.जी. (शिक्षा), भा.कृ.अनु.प, नई दिल्ली

